चंद्र के विभिन्न योग

• ग्रहण योग

परिभाषाः जिस व्यक्ति की कुंड़ली में चंद्र व राहु एक ही भाव में बैठे हो तो **ग्रहण योग** बनता हैं।

फलः जातक को जीवन भर परेशानी से घेरे रहती हैं। अत्याधिक संघर्ष के बावजूद अधिक उन्नति नहीं होती। जातक हीन भावना से ग्रस्त रहता हैं। चंद्र–राहु जिस भाव में हो उस भाव के लिए ज्यादा क्षति पहुंचति हैं।

• सुनफा योग

परिभाषाः जिस व्यक्ति की कुंड़ली में चंद्रमा से दूसरे घर में मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र व शनि पांचो में से किसी एक की स्थिति हो तथा चंद्र से बारहवे भाव में कोई ग्रह न हो, तो **सुनफा योग** बनता हैं।

फलः जातक तीव्र बुद्धिमान, धनवान तथा ख्याति प्राप्त होता हैं। सुनफा योग का विशेष प्रभाव द्वितिय भाव में स्थित ग्रह के गुणों के अनुसार होता हैं। जैसे द्वितिय भाव में मंगल स्थित होने पर जातक बलवान, पराक्रमी, वाणी में कुछ उग्रता एवं विरोधि करने वाली प्रकृति का होता हैं। बुध होने पर कुशाग्र बुद्धि, सुंदर, हंसमुख, कला प्रेमी बनाता हैं। । गुरू होने पर विद्वान, धनवान, समृद्ध, राज्य कृपापात्र बनाता हैं। । शुक्र होने पर बुद्धिवान, भोग– विलास के साधनों से युक्त वाला बनाता हैं। । शनि होने पर धनी, नीतिवान तथा किसी स्थान का प्रमुख या मुखिया होता हैं।

• अनफा योग

परिभाषाः जिस व्यक्ति की कुंड़ली में चंद्रमा से बारहवें भाव में मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र व शनि पांचो में से किसी एक की स्थिति हो तथा चंद्रमा से दूसरे कोई ग्रह नहो, तो **अनफा योग** बनता हैं।

फलः जातक सुंदर व स्वस्थ, समाज में प्रतिष्ठत, संतोषी व विचारवान एवं चरित्रवान होता हैं। अनफा योग का विशेष प्रभाव बारहवें भाव में स्थित ग्रह के गुणों के अनुसार होता हैं। जैसे मंगल होने से उग्र स्वभाव, संघर्षरत, सवार्थी, प्रवृति वाला बनाता हैं। बुध होने से सुंदर, पुण्यात्मा, लोकप्रिय, कला में रूचि रखने वाला बनाता हैं। गुरू होने से बुद्धिमान, कला में रूचि, राज्य कृपापात्र वाला बनाता हैं। शुक्र होने से धनवान, भेग विलास के साधनो से युक्त वाला बनाता हैं। शनि होने से गुणवान, विचारशील, एवं चिंतातुर स्वभाव का होता हैं।

• दुरूधरा योग

परिभाषाः जिस व्यक्ति की कुंड़ली में चंद्रमा से दूसरे तथा बारहवें दोनों भावों में मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि। पांचो में से कोई न कोई स्थित हो, तो **दुरूधरा योग** बनता हैं।

फलः जातक त्यागशील, सुखी, धनवान, अनेक संसारिक सुख–साधनों का उपभोग करने वाला बनाता हैं।

दुरूधरा योग का विशेष प्रभाव द्वितीय एवं बारहवें भाव में स्थित ग्रहों के गुण–दोष–प्रकृति के अनुसार होता हैं।

• केमद्रुम योग

परिभाषाः जिस व्यक्ति की कुंड़ली में चंद्रमा के दोनो और अर्थात् 2,12 वें भाव में कोई ग्रह न हो, तो **केमद्रुम योग** बनता हैं।

मंतव्यः चंद्रमा के साथ कोई ग्रह हो, तो केमद्रुम योग नहीं बनता, भले ही चंद्रमा के दोनो और कोई ग्रह न हो। चंद्रमा यदि त्रिकोण या केंद्र में हो तो केमद्रुम योग का विशेष कुप्रभाव नहीं होता।

फलः यह अशुभ योग हैं। जातक परेशान रहता हैं, उसकी आर्थिक स्थिति सदैव कमजोर रहती हैं।

• चंद्राधि योग

परिभाषाः जिस व्यक्ति की कुंड़ली में यदि चंद्रमा से छठे, सातवें एवं आठवें भाव तीनों में शुभ ग्रह बुध–गुरू–शुक्र सिथत हो, तो **चंद्राधि योग** बनता हैं।

फलः जातक स्वस्थ, चतुर, शत्रु विजयी, निरोगी, बहुत धनवान, सुखी एवं विख्यात होता हैं।

• अमला योग

परिभाषाः जिस व्यक्ति की कुंड़ली में चंद्रमा से दसवें स्थान पर शुभ ग्रह बैठा हो, तो **अमला योग** बनता हैं।

फलः जातक को सब सुख–सामग्री प्राप्त होती हैं। वह गुणवान, चरित्रवान एवं प्रसिद्ध होता हैं तथा सुखी जीवन व्यतीत करता हैं।

• चंद्र–मंगल योग

परिभाषाः जिस व्यक्ति की कुंड़ली में चंद्र व मंगल एक ही भाव में हो, तो **चंद्र मंगल** योग बनता हैं।

फलः यह विशेष धन देने वाला योग हैं, अंतः इस योग में उत्पन्न जातक धनवान, स्वस्थ, प्रस्न्नचित एवं विख्यात होता हैं। जिस व्यक्ति की कुंड़ली में चंद्र मंगल शुभ स्थान में हो वह शुभ व अशुभ स्थान में अशुभ फल प्रदान करते हैं।

• शकट योग

परिभाषाः जिस व्यक्ति की कुंड़ली में चंद्रमा से छठे, आठवें, बारहवें भाव में बृहस्पति हो, तो **शकट योग** बनता हैं। यदि चंद्रमा लग्न में हो तो शकट योग नहीं होता।

फलः जातक का जीवन अत्यंत दुःखमय होता हैं। उसके हदय में एसा दुःख का कांटा लगा होता हैं जीससे छुटकारा पाना कठिन होजाता हैं। एसा जातक साधारण जीवन व्यतीत करता हैं। कभी कभी भाग्य सितारा तेज हो जाता हैं और कभी बिल्कुल गिरा जाता हैं। व्यक्ति भाग्यहीन होता हैं।

चंद्र के अन्य योग

- **पिशाचग्रस्त योग**
  परिभाषाः राहु चंद्र की युति होने पर पिशाचग्रस्त योग बनता है।
  फलः व्यक्ति को पिशाच बाधा की तकलीफ उतपन्न होती है। यह योग व्यक्ति को निराशावादी व आत्मघाती स्वाभाव वाला बनता है। यदि लग्न में राहु–चंद्र एवं पंचम, नवम या व्ययस्थान में मंगल या शनि हो तो भी यह योग बनता है।

- **चांडाल/चंडाल योग**
  परिभाषाः जिस व्यक्ति की कुंड़ली में किसी भी स्थान में राहु और गुरू की युति हो तो **चांडाल/चंडाल योग** बनता है,
  फलः जातक को नास्तिक बनाता है। दारिद्रसूचक योग है, इस योग से दारिद्रता आती है। हमेशा को मानसिक तनाव बना रहता है। व्यक्ति को हमेशा शंका ये घेरे रहती है, उसका लागो पर से भरोसा उठ जाता हैं।

- **अरिष्टभंग योग**
  परिभाषाः जिस व्यक्ति की कुंड़ली में मेष, वृषभ, कर्क इन तीन राशीयों में से किसी भी राशी का लग्न हो और राहु 9,10,11 स्थान में से किसी भी स्थान में हो तो **अरिष्टभंग योग** बनता है।
  फलः यह अत्यंत शुभ फलदायक योग है।

- **परिभाषा योग**
  परिभाषाः जिस व्यक्ति के लग्न में या 3,6,11 में से किसी भी स्थान में राहु तो **परिभाषायोग** बनता है, राहु पर शुभ ग्रहों की द्रष्टि होतो अत्यंत शुभ फल देता है।
  फलः जातक को शत्रुविजयी बनाता हैं।

GURUTVA KARYALAY

MB-28, BADAGADA BRIT COLONY
BHUBANESWAR (ORISSA)
INDIA, PIN- 751 018
Call- 91+ 9338213418, 91+ 9238328785
Email:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in
gurutva_karyalay@yahoo.in
gurutva.karyalay@gmail.com

Web:- http://gk.yolasite.com/
http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

Note:- हम ज्योति विज्ञान, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र एवं तंत्र से सम्बंधित जानकारी मुफ्त मे प्रदान कर गैर लाभ संगठनों के वाणिज्यिक इस्तेमाल हेतु एवं मात्र व्यक्ति गत स्तर पर इस्तेमाल करने हेतु दे रहे है. कोइभी व्यक्ति हमारे लेख और जानकारी सम्बंधित मुद्दो पर किसी भी प्रकार का विवाद नही कर सकते. हमारे सभी लेख सिर्फ हमारे दोस्त, रिश्तेदार और परिचित लोगो के उपयोग एवं लाभ के उद्देश्य के लिए दिये गये हैं.
(सभी केवल विवादों विषय भुवनेश्वर न्याय क्षेत्र ही मान्य होग)